RECENT RESEARCHES in
SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES

Issue : 1, Year : 4
Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 29 - 33
ISSN 2348 – 3318

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

पर्यावरण का पर्वतीय महिलाओं के जीवन पर प्रभाव – एक विश्लेषण

जे0 पी0 पचौरी
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग,
हे०न०ब० गढ़वाल विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
श्रीनगर (गढ़वाल)

किरन बाला
असि0 प्रोफेसर, समाजशास्त्र,
एस.एस.डी.पी.सी. गर्ल्स (पी.जी.) कॉलेज,
रूड़की (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

Received : 08/04/2017 *1st BPR* : 10/04/2017 *2nd BPR* : 12/04/2017 *Accepted* : 16/04/2017

ABSTRACT

जल, कृषि उत्पादन, वन्य पारिस्थितिकी किस प्रकार पर्वतीय महिलाओं के जीवन को प्रभावित करती हैं। पर्यावरण किस प्रकार महिलाओं से अन्तः सम्बन्धित है। अध्ययन के लिए उत्तराखण्ड राज्य के जनपद चमोली के विकास खण्ड जोशीमठ के 49 ग्राम पंचायतों में से 10 का चयन क्रमांक सूची विधि से किया गया है जिसमें प्रत्येक ग्राम पंचायत से 30–30 सूचनादाता का चयन दैव निदर्शन की लॉटरी प्रणाली से किया गया। अतः 300 महिलाओं को सूचनादाता के रूप में चुना गया। तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि पर्यावरणीय ह्रास का प्रभाव पर्वतीय महिलाओं की दैनिक दिनचर्या पर पड़ता है। पर्यावरण का पर्याय महिला है, यह कहना अतिश्योक्ति न होगा। यद्यपि वन अधिनियम ने जंगलों पर महिलाओं के अधिकारों को छीन लिया है इसके बावजूद भी वनाग्नि को बुझाते हुए वे अपने प्राणों की परवाह नहीं करती, जो वनों के प्रति उनके लगाव हो दर्शाता है। इस प्रकार के पारिस्थितिकी असन्तुलन के लिए महिलाएं संघर्षशील रहती हैं। क्योंकि पर्यावरण को बचाने का प्रश्न इनके स्वयं के अस्तित्व को बचाने जैसा ही है।

मानव जीवन के विकास में पर्यावरणीय दशाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। इन पर्यावरणीय दशाओं के अन्तर्गत वे सभी दशाएँ सम्मिलित हैं जिनको मनुष्य अपने चारों ओर अनुभव करता है। रॉस का कथन है कि पर्यावरण कोई भी वह बाहरी शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है।[1] अतः पर्यावरण के अन्तर्गत भौतिक एवं सामाजिक दोनों पक्ष सम्मिलित हैं। प्रारम्भ में मनुष्य प्रकृति के अनुरूप जीवन–यापन करता था किन्तु आज वह प्रकृति पर अधिकार जमाने की नापाक कोशिश करने लगा है जिसके कारण पर्यावरण वैश्विक पटल पर एक ज्वलन्त मुद्दे के रूप में सामने आया है। विकसित देशों में प्रतिव्यक्ति आय अधिक बढ़ी है। उपभोक्ता वस्तुओं की अत्यधिक खपत, आय की कभी न खत्म होने वाली इच्छा तथा आराम न करना, स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव ड़ालता है। इसलिए यह सवाल जायज है कि क्या प्रति व्यक्ति उपभोक्ता वस्तुओं का उच्चतर स्तर प्राप्त करना ही हमारा यथार्थ लक्ष्य है।[2] पिछले 100–200 वर्षो में इतने बदलाव देखे गये जितने पिछले हजारों वर्षो में भी नहीं हुए जिसका कारण यह है कि मनुष्य ने यह क्षमता प्राप्त कर ली है कि वो प्राकृतिक परिवेश में बदलाव कर सकता है।[3] इसी विचार ने मानव के सम्मुख पर्यावरण संकट या दूसरे षब्दों में कहें तो अस्तित्व का संकट पैदा कर दिया है । फलस्वरूप विभिन्न पर्यावरणीय समस्याएँ पैदा हुई हैं।

आज विकास के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन किया जा रहा है। आई0पी0सी0सी0 की रिपोर्ट के अनुसार ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन यदि इसी तरह जारी रहा तो भूमण्ड़ल का औसत ताप खतरनाक बिन्दु पर पहुँच जायेगा।[4] वास्तव में प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण दोनों के मध्य कार्यकारण सम्बन्ध है। प्राकृतिक समस्याओं से सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। संयुक्त राष्ट्र की अर्न्तराष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन की रिपोर्ट के अनुसार वायुमण्ड़ल में बढ़ती कार्बन की मात्रा से भूख, संसाधन विवाद, बाढ़, पलायन जैसी समस्याएँ जन्म लेती हैं जिसके नुकसान की भरपाई काफी मुश्किल है।[5] एक भारतीय पर्यावरणविद ने कहा है, ''पर्यावरण की रक्षा जीवन मृत्यु का प्रश्न है। हम प्रकृति के वरदानों का आनन्द उठा रहे हैं। हम इसे अपना कर्तव्य समझें कि हमें पर्यावरण को प्रदूषित नहीं करना है। हमें प्रकृति की देखभाल करनी चाहिए तभी प्रकृति हमारी देखभाल कर सकेगी।[6] पर्यावरण असन्तुलन का प्रभाव मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक दोनों पक्षों पर पड़ता है। विकासीय क्रम को आधार मानते हुए हम जिस गति से आगे बढ़ रहे हैं, उसमें पर्यावरण को बचाना एक बड़ी चुनौती है। इस दिशा में प्रयास किये जा रहे हैं। किन्तु सुनियोजित रणनीति, जागरूकता के अभाव में अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं हो पा रही है।

यद्यपि पर्यावरण का सम्बन्ध भूमण्ड़ल के प्रत्येक जीव से है किन्तु प्रत्येक जीव की अन्तक्रिया का स्वरूप भिन्न है। मानव के साथ अन्तक्रिया के विविध स्वरूपों के साथ ही व्यापक भी है। पर्यावरण राजनैतिक आर्थिक कारणों से भी जुड़ा हुआ है जिसके कारण संसाधनों का असमान वितरण हो रहा है।[7] The United Nations Group of Government Expert ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि, ''अब इसमें तनिक सन्देह नहीं हो सकता कि संसाधनों का अभाव तथा पर्यावरणीय दबाव सभी लोगों व राष्ट्रों के लिए संकट

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 29-33 , ISSN 2348 – 3318
जे0 पी0 पचौरी एवं किरन बाला
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

है। यह चुनौती मूलरूप से असैनिक है।[8]

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था प्रकृति के चारों ओर घूमती है। कृषि, पशुपालन, ईधन, चारा पानी का प्रबन्धन महिलाएँ ही करती हैं। वन्दना शिवा ने स्पष्ट किया कि भारतीय ग्रामीण महिलाएँ किस प्रकार प्रकृति से अन्तःस्थापित करती हैं। वे पारिस्थितिकी विनाश के कारणों को अनुभव करती हैं। इसे बचाने एवं पुर्नजीवित करने का कार्य भी करती हैं।[9] विशेष रूप से पर्वतीय क्षेत्रों में जहाँ पुरूष रोजगार की तलाश में शहरों की ओर प्रवास करते हैं। फलस्वरूप सभी कार्यो का बोझ महिलाओं पर ही आ जाता है। एक ओर विषम भौगोलिक परिस्थितियाँ दूसरी ओर पर्यावरण असन्तुलन की समस्या ने उनकी दैनिक दिनचर्या को और भी कठिन बना दिया है। पर्वतीय पारिस्थितिकी में जल जंगल जमीन का प्रमुख योगदान है। महिलाओं का वनों के अस्तित्व को बचाने के लिए 70 के दशक का विश्व प्रसिद्ध चिपको आन्दोलन इसका प्रमाण है कि पर्वतीय महिलाओं का जीवन वनों की क्षति से कितना प्रभावित होता है।[10] महिलाओं के जीवन पर पर्यावरण का प्रभाव स्पष्ट करते हुए वन्दना शिवा लिखती हैं कि पश्चिमीकरण विकासशील देशों में महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता को कम करता जा रहा है। पारम्परिक कृषि विधियाँ और नाजुक पारिस्थितिकी प्रणालियों और प्राकृतिक संसाधनों के विघटन से मनुष्य शहरों की ओर विस्थापित हो रहे हैं। इसका सीधा असर महिलाओं के जीवन संघर्षो में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए सोमालिया में जहाँ बड़े पैमाने पर भुखमरी, गरीबी, बीमारी व्याप्त है, इस दृष्टि से बच्चों और महिलाओं के जीवन को उत्पीड़न से लड़ने के लिए दुनियाभर में शिकार में चित्रित किया गया है।[11] वर्ष 2009 की संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार विकासशील देशों में महिलाएँ ही पानी, अनाज, ईधन के लिए लकड़ी इकट्ठा, भोजन तैयार करती हैं । इसलिए जलवायु परिवर्तन का सर्वाधिक प्रभाव भी महिलाओं पर ही पड़ता है।[12] अतः प्रस्तुत शोध पत्र में यह विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है कि जल, कृषि उत्पादन, वन्य पारिस्थितिकी किस प्रकार पर्वतीय महिलाओं के जीवन को प्रभावित करती हैं। पर्यावरण किस प्रकार महिलाओं से अन्तः सम्बन्धित है। अतः इस दृष्टिकोण से भी अध्ययन विषय ''पर्यावरण का पर्वतीय महिलाओं के जीवन पर प्रभाव–एक विश्लेषण'' प्रासंगिक है।

शोध प्ररचना

अध्ययन उत्तराखण्ड राज्य के जनपद चमोली पर आधारित है। जिसमें से एक विकास खण्ड जोशीमठ का चुनाव किया गया जिसकी 49 ग्राम पंचायतों में से 10 का चयन क्रमांक सूची विधि से किया गया है जिसकी कुल महिला जनसॅख्या में से प्रत्येक ग्राम पंचायत से 30–30 सूचनादाता का चयन दैव निदर्शन की लॉटरी प्रणाली से किया गया। अतः 300 महिलाओं को सूचनादाता के रूप में चुना गया।

अध्ययन के अन्तर्गत प्राथमिक तथ्यों का संकलन, साक्षात्कार अनुसूची, अवलोकन, साक्षात्कार के माध्यम से किया गया। द्वितीयक तथ्यों के संकलन के लिए पुस्तकें, शोध ग्रन्थ, पत्र–पत्रिकाएं, प्रशासनिक आंकड़े, इत्यादि का प्रयोग किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

- पर्यावरण का महिलाओं की दैनिक दिनचर्या पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- पर्यावरण का महिलाओं के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव के स्वरूप का विश्लेषण करना ।
- जल विद्युत परियोजनाओं का स्वास्थ्य एवं पर्यावरण पर प्रभाव का अध्ययन करना ।

उपलब्धिया

महिलाओं की दैनिक दिनचर्या पर प्रभाव

देश के करीब 2 लाख 31 हजार गाँव आज भी पानी की समस्या से ग्रस्त हैं।[13] ग्रामीण पारिस्थितिकी में पानी की हो या चारा पत्ती की या वनों की इसकी सबसे बड़ी कड़ी महिलाएँ रही हैं। घटते वनों और दूर–दराज होते जा रहे पानी के स्रोतों की परेशानियाँ महिलाओं को झेलनी पड़ती है।[14]

सारणी संख्या 1
महिलाओ की दैनिक दिनचर्या परप्रभाव

पानी की सुविधा	आवृत्ति	प्रतिशत	चारा पत्ती एकत्रित करने में समस्या	आवृत्ति	प्रतिशत	वन अधिनियम का प्रभाव	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	174	58	हाँ	292	97.33	नकारात्मक	287	95.67
नहीं	126	42	नहीं	08	2.67	सकारात्मक	13	4.33
योग	300	100		300	100		300	100

अतः सारणी संख्या 1 से स्पष्ट है कि 58% सूचनादाताओं को पेयजल व घरेलू कार्यों के लिये पानी की सुविधा घर में है जबकि 42% सूचनादाताको पानी के लिए घर से काफी दूरी तय करनी पडतीहै। 97.33% सूचनादाताओं का मानना है चारा–पत्ती एकत्रित करने में उन्हे समस्या आती है। 2.67% सूचनादाता इसे समस्या नहीं मानती हैं। 95.67% महिलाएं यह मानती हैं कि वन पर उनके

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 29-33 , ISSN 2348 – 3318
जे0 पी0 पचौरी एवं किरन बाला
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

अधिकार समाप्त हुए तथा उनके जीवन पर इसका नकारात्मक प्रभाव पडा है यदि सम्पूर्ण वनों को उनके अधिकार में दे दिया जाये तो वे वनों का संरक्षण व प्रबन्धन करेंगी। 4.33% महिलाओं के अनुसार वन अधिनियम का उनके जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पडा है।

जंगली पशुओं का आबादी वाले क्षेत्रों में प्रवेश का प्रभाव एवम स्वरूप

पिछले कुछ वर्षो से जंगल की पारिस्थितिकी में बदलाव आया है। जंगलों में भोजन की कमी, बढ़ता मानव हस्तक्षेप के कारण प्रतिमाह औसतन 10–15 घटनाएँ घटित होती हैं जिसमें अधिकतर घटनाओं में आबादी वाले क्षेत्रों में जंगली जानवरों के हमले से लोगों की मौत हो जाती है। चारा–पत्ती एकत्रित करते समय महिलाओं पर भी जंगली जानवरों के हमले की घटनाएँ सामने आयी हैं।

सारणी संख्या 2
जंगली पशुओं का आबादी वाले क्षेत्रों में प्रवेश का प्रभाव एवम् स्वरूप

प्रभाव	आवृत्ति	प्रतिशत	प्रभाव का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	286	95.33	बच्चों, वृद्धों की असुरक्षा	37	12.94
नहीं	14	4.67	पशुओं की असुरक्षा	48	16.78
			चारा–पत्ती निकालते समय	108	37.77
			उपरोक्त सभी	93	32.51
योग	300	100		286	100

अतः सारणी संख्या 2 से स्पष्ट है कि 95.33% महिलाओं का मानना है कि इस घटना से उनका जीवन प्रभावित होता है, 4.67% महिलाएं मानती हैं कि इसका उन पर प्रभाव नहीं पड़ता है। 12.94% महिलाएं मानती हैं कि उनके बच्चों, वृद्धों को असुरक्षा महसूस होती हैं। 16.78% महिलाएं पालतू पशुओं की असुरक्षा को महसूस करती हैं, 37.77% महिलाओं का मानना हैं चारा–पत्ती निकालते समय जंगली जानवर उन पर हमला कर सकते हैं, 32.51% महिलाओं के जीवन पर उपरोक्त सभी प्रकार के प्रभाव पड़ते हैं।

विगत् वर्षों की तुलना में उत्पादन में परिवर्तन एवम् कारण

विगत कई वर्षो से जलवायु परिवर्तन का कृषि उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ा है विशेष रूप से उन पहाड़ी क्षेत्रों में जहाँ फसले वर्षा पर निर्भर हैं। उन क्षेत्रों में समय पर बारिश न होना, सूखा, ओलावृष्टि इत्यादि समस्याएँ आती हैं। फलस्वरूप कृषि उत्पादन बहुत ही कम होता है। जहाँ एक ओर रासायनिक खादों के प्रयोग से तो वहीं दूसरी ओर जलवायु परिवर्तन का कृषि उत्पादन पर प्रभाव पड़ा है। वैज्ञानिक रसेल कार्सन ने पेस्टीसाइड के बहुत ज्यादा उपयोग से होने वाले नकारात्मक प्रभावकी ओर ध्यान दिलाया है।[15]

सारणी संख्या 3
विगत् वर्षों की तुलना में उत्पादन में परिवर्तन एवम्कारण

परिवर्तन	आवृत्ति	प्रतिशत	कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
वृद्धि	04	1.33	रासायनिक खादों का प्रयोग	20	07.04
कमी	284	94.67	समय पर वर्षा न होना	251	88.38
कोई परिवर्तन नहीं	12	4.00	6 बिखरी हुई खेती	05	01.7
			जंगली पशुओं के द्वारा फसलों का नष्ट होना	08	02.86
योग	300	100		284	100

अतः सारणी संख्या 3 से ज्ञात होता है, कि 1.33% सूचनादाता यह मानती हैं कि विगत् कुछ वर्षों की तुलना में उत्पादन में वृद्धि हुई है वहीं 94.67% सूचनादाताओं के अनुसार उत्पादन में कमी आयी है व 4% सूचनादाताओं का मानना हैं उत्पादन में कोई परिवर्तन नहीं आया हैं। 7.04% महिलाएं रसायन खादों के प्रयोग को उत्पादन घटने का कारण मानती हैं, 88.38% महिलाओं के अनुसार समय पर वर्षा न होने के कारण उत्पादन कम होता हैं, 1.76% महिलाएं बिखरी खेती को इसका कारण मानती हैं,

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 29-33 , ISSN 2348 – 3318
जे0 पी0 पचौरी एवं किरन बाला
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

2.82% महिलाओं के अनुसार जंगली पशुओं के द्वारा फसलों के नष्ट होने से उत्पादन कम मात्रा में होता है।

जल विद्युत परियोजनाओं से स्वास्थ्य पर प्रभाव एवम् स्वरूप

जल विद्युत परियोजनाओं से वन क्षेत्र काफी मात्रा में नष्ट होते हैं। इसके अतिरिक्त डूब क्षेत्र के गाँवो के दुर्बल वर्ग पर सबसे बुरा प्रभाव पड़ता है।[16] परियोजनाओं के निर्माण से होने वाले विस्थापन से प्राकृतिक पर्यावरण के साथ–साथ सामाजिक पर्यावरण भी प्रभावित होता है। परियोजना निर्माण के लिए ग्रामीणों की कृषि भूमि व वन नष्ट हो जाते हैं और बदले में उन्हें उचित मुआवजा और उचित परिवेश तक नहीं मिलता। इस सम्बन्ध में क्लॉड अल्वारेज ने नर्मदा नदी घाटी परियोजनाओं को दुनिया का सबसे बड़ा आयोजित हादसा माना है।[17] बांध निर्माण कार्यो से धूल, मिट्टी के गुब्बार से आस–पास के लोग विभिन्न बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। 1980 के दशक से अब तक विभिन्न जल विद्युत परियोजनायें विवादों के घेरे में रही हैं ।

सारणी संख्या 4
जल विद्युत परियोजनाओं से स्वास्थ्य पर प्रभाव एवम् स्वरूप

स्वास्थ्य पर प्रभाव	आवृत्ति	प्रतिशत	प्रभाव का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	255	85	स्वास सम्बन्धी	66	25.88
नहीं	12	04	मानसिक	35	13.72
पता नहीं	33	11	आँख एवम्कानसम्बन्धी रोग	50	19.61
			चर्म रोग	04	1.57
			उपरोक्त सभी	100	39.22
योग	300	100		255	100

सारणी संख्या 4 से ज्ञात होता है 85% महिलाएं यह मानती है कि जल विद्युत परियोजनाओं के निर्माण से स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जबकि 4% महिलाओं के अनुसार जल विद्युत परियोजना का स्वास्थ्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है वहीं 11% महिलाओं को इस सम्बन्ध में कोई ज्ञान नहीं हैं। 25.88% महिलाओं के अनुसार स्वास सम्बन्धी रोग, परियोजना के निर्माण कार्यों से होता हैं जबकि 13.72% महिलाए शोरगुल के कारण मानसिक रोग, 19.61% महिलाए आँखों, कानों सम्बन्धित बीमारी से ग्रसित हैं, 1.57% महिलाओं के अनुसार चर्म रोग मुख्य है जबकि 39.22% महिलाओं के अनुसार उपरोक्त सभी रोगो का सामना करना पड़ता है।

जल विद्युत परियोजनाओं से पर्यावरण असन्तुलन एवम् स्वरूप

जल विद्युत परियोजनाओं के निर्माण में वृक्षों के विनाश से पर्यावरण असन्तुलन की दशा उत्पन्न होती है। कृषि या वनों का महिलाओं से गहरा सम्बन्ध होता है। इसलिए विस्थापन से भी सर्वाधिक प्रभावित महिलाए ही होती हैं। पारिस्थितिकी दृष्टि से भी पानी का इकट्ठा होना सही नहीं माना जाता है। बांध बनने से मछलियों को भी भारी नुकसान होता है तथा रूके पानी से बीमारियाँ बढ़ जाती हैं।[18]

सारणी संख्या 5
जल विद्युत परियोजनाओं से पर्यावरण असन्तुलन एवम् स्वरूप

पर्यावरण असन्तुलन	आवृत्ति	प्रतिशत	असन्तुलन का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	278	92.67	पानी के स्रोत का सूखना	62	22.30
नहीं	07	2.33	कृषि योग्य भूमि कम होना	22	7.91
पता नहीं	15	05	वन क्षेत्र का कम होना	26	9.35
			भूमि क्षरण	12	4.32
			पर्यावरण प्रदूषण	64	23.02
			उपरोक्त सभी	92	33.10
योग	300	100		278	100

अतः सारणी संख्या 5 से स्पष्ट होता है कि 92.67% सूचनादाता यह मानती हैं कि परियोजनाओं के निर्माण से पर्यावरण असन्तुलित होता हैं, जबकि 2.33% सूचनादाताओं के अनुसार इससे पर्यावरण असन्तुलित नहीं होता, वहीं 5% सूचनादाताओं को

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 29-33 , ISSN 2348 – 3318
जे0 पी0 पचौरी एवं किरन बाला
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

इस विषय में कोई ज्ञान ही नहीं हैं। जिनमें से 22.30% सूचनादाता यह मानती हैं कि निर्माण कार्यों से पानी के स्रोत कम हो गये हैं। 7.91% सूचनादाताओं के अनुसार कृषि योग्य भूमि कम होती हैं, 9.35% सूचनादाताओं के अनुसार वन क्षेत्र का कम होना, 4.32% सूचनादाता का मानना है कि भू–क्षरण, 23.02% सूचनादाता पर्यावरण प्रदूषण, 33.10% सूचनादाता उपरोक्त सभी प्रकार के असन्तुलन का मुख्य कारण जल विद्युत परियोजनाओं के निर्माण को मानती हैं।

निष्कर्ष

अधिकांश 58 प्रतिशत महिलाओं के घरों में पेयजल एवं घरेलू उपयोग हेतु पानी की सुविधा उपलब्ध है। 97.33 प्रतिशत महिला सूचनादाताओं को अपने पशुओं के लिए चारा–पत्ती एकत्रित करने में विभिन्न कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। जंगली जानवरों का आबादी क्षेत्र में आ जाने से अधिकतर 95.33 प्रतिशत महिला सूचनादाताओं का जीवन प्रभावित होता है जिसमें से अधिकांश 37.77 प्रतिशत महिलाओं को चारा–पत्ती निकालते समय जानवरों से भय एवं असुरक्षा महसूस होती है। अधिकतर 95.67 प्रतिशत महिलाओं के जीवन पर वन अधिनियम का नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। अधिकतर 94.67 प्रतिशत महिलायें इस तथ्य से सहमत हें कि विगत वर्षो में कृषि उत्पादन में कमी आयी है जिसमें से 88.38 प्रतिशत महिलाओं का मानना है कि इसका एक प्रमुख कारण समय पर वर्षा न होना है। अधिकांश 85 प्रतिशत महिलाओं के स्वास्थ्य पर जल विद्युत परियोजनाओं का विपरीत प्रभाव पड़ा है जिसमें से अधिकतर 39.22 प्रतिशत महिलाओं के अनुसार जल विद्युत परियोजनों के नकारात्मक प्रभाव के रूप में श्वास, आँख, नाक, कान, चर्म, मानसिक इत्यादि सभी रोगों से ग्रसित होने की सम्भावना रहती है। अधिकांश 92.67 प्रतिशत महिलाएं मानती हैं कि जल विद्युत परियोजनाओं से पर्यावरण को क्षति होती है जिसमें से अधिकतर 33.10 प्रतिशत महिला सूचनादाता पर्यावरण असन्तुलन को, पानी के स्रोत का सूखना, कृषि योग्य भूमि, वन क्षेत्र का कम होना, भूमि क्षरण, पर्यावरण प्रदूषण इत्यादि के रूप में देखते हैं।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पर्यावरणीय ह्रास का प्रभाव पर्वतीय महिलाओं की दैनिक दिनचर्या पर पड़ता है। जलवायु परिवर्तन जल विद्युत परियोजनाएँ, जंगली पशुओं का आबादी की ओर आना जैसी घटनाओं से भी सर्वाधिक महिलाएं ही प्रभावित होती हैं । पर्यावरण का पर्याय महिला है, यह कहना अतिश्योक्ति न होगा। यद्यपि वन अधिनियम ने जंगलों पर महिलाओं के अधिकारों को छीन लिया है इसके बावजूद भी वनाग्नि को बुझाते हुए वे अपने प्राणों की परवाह नहीं करती, जो वनों के प्रति उनके लगाव हो दर्शाता है । इसी आत्मीयता के कारण पर्यावरण में होने वाले सकारात्मक व नकारात्मक परिवर्तन से सीधे–सीधे महिलाएं ही प्रभावित होती हैं। इस प्रकार के पारिस्थितिकी असन्तुलन के लिए महिलाएं संघर्षशील रहती हैं क्योंकि पर्यावरण को बचाने का प्रश्न इनके स्वयं के अस्तित्व को बचाने जैसा ही है। अतः पर्यावरण को संरक्षित करने का अर्थ महिलाओं के जीवन को बेहतर एवं सुगम बनाने में एक पहल करना है ।

सन्दर्भ सूची

1. Rose,E.J. Sociology and Social Problems, Bruce Publication,1953, p.-35
2. दास, अमृतानन्द, फाउन्डेशन ऑफ गाँधीयन इकॉनामिक्स, मद्रास, एलाएड पब्लिशर्स, 1979, पृ0स0–190
3. रंगराजन, महेश, भारत में पर्यावरण के मुद्दे, पियर्सन प्रकाशन, 2010, पृष्ठ XIII
4. इण्डिया टुडे, 23 दिसम्बर 2009, पृ0 11
5. अनिल जोशी, लेख (सपां), अमर उजाला, 22 अप्रैल, 2015, पृ0 12
6. C.S. Mehta: Environmental Protection and the Law. Delhi: Ashish Pub.1991,p.1
7. गाडगिल, माधव, गुहा रामचन्द्र, हालात–ए–हिन्दुस्तान (भारत का समकालीन पारिस्थितिकी परिदृश्य) पहाड़ पोथी, 2004, पृ0स0 114
8. R.K. Sapru : Development Administration New Delhi:Sterling Publisher, 1994,pp.194-194
9. Shiva Vandana, Staying Alive:Women Ecology and Survival in India,By Kali for Women, New Delhi,1988
10. सुदेशा आर्य, पर्वतीय नारी की संघर्ष गाथा, उत्तराखण्ड कम्प्यूटर ग्राफिक्स, हरिद्वार, 2004, पृ0स0 32–36
11. Who's Who of Women and the Envir.- Vandana Shiva, UN, Environment Prog. (UNEP) Retrieved, 15oct.2013
12. एलिना ड्यूजेंड, जलवायु परिवर्तन की शिकार महिलाएँ (लेख), अमर उजाला, पृ0स0 10
13. जगनारायण, मधु ज्योत्सना, भारत में बढ़ता जल संकट, कुरूक्षेत्र, जून 2004, पृ0स0 15
14. अनिल जोशी, महिलाओं से पर्यावरण, 8 मार्च 2016, पृ0स0 10
15. Carson ,Rachel,Silent Spring, Special anniversary Eddition,Houghton, Miffin,Bosten,1962 (1987)
16. डा0 डी0 एन0 तिवारी, वन आदिवासी एवं पर्यावरण, शान्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, 1996, पृ0स0 165
17. रंगराजन, महेश(सम्पा) भारत में पर्यावरण के मुद्दे एक संकलन, पियर्सन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ0स0 231
18. Gold Smith E.O & N.Hildyard: The Social & Environmental effect of large dams: Water Bridge Ecological Center,Comelford Cornwall,U.K,1984